कमलेश्वर के उपन्यास 'कितने पाकिस्तान' के साम्राज्यवाद में उभरती उत्तर आधुनिकता

डॉ. कमलेश

एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग

राजकीय महाविधालय

अंबाला (हरियाणा)

आधुनिकता के पश्चात सन् 1970 के आसपास उत्तर-आधुनिकता का नया दौर शुरू हो गया (भारत के संदर्भ में सन 1990 के पश्चात्)। प्रसिद्ध विद्वान जेमसिन उत्तर आधुनिकता के संबंध में विचार व्यक्त करते हुए लिखते है, ''उत्तर-आधुनिकता गोया वैज्ञानिक स्तर पर वैद्युत एवं आण्विक क्रांति से तथा अर्थशास्त्र पर बहुराष्ट्रीय पूंजीवाद से संपृक्त है।''1 वास्तव में यूरोपीय जगत जब औद्योगिक एवं वैज्ञानिक विकास से ऊब गया तब ''प्रौद्योगिकी के बदले लोग पारिस्थितिक विज्ञान ;म्बवसवहलद्ध एवं प्रकृति की ओर लौटने की बात करने लगे।''2 इस प्रकार उत्तर आधुनिकता में लोगों का रुख एक बार फिर ग्राम्य एवं सांस्कृतिक जगत की ओर मुड़ने लगा। ''जैमसिन ने प्रसिद्ध अर्थशास्त्री अर्नेस्ट मेंडल के प्रारूप पर यथार्थवाद, आधुनिकता एंव उत्तर आधुनिकता का श्रेणीकरण अर्थशास्त्र के हवाले से किया है। 1848 में भाप इंजन, 1890 में डीजल इंजन और 1940 के पश्चात वैद्युत एवं आण्विक ऊर्जा का प्रयोग, मेंडल के तीनों औद्योगिक पड़वों को, मंडी पं़ूजीवाद, एकाधिकारी पं़ूजीवाद और बहुराष्ट्रीय पूंजीवाद तीन काल खंडों की प्रस्तावना घोषित करता है।''3 वास्तव में यही बहुराष्ट्रीय पं़ूजीवाद नव पूंजीवाद है जिसने उत्तर आधुनिक उदारीकरण एवं बाज़ार्रवाद को विकसित किया। ''26 दिसंबर 1991 को सोवियत संघ के विघटन'4 के पश्चात अमेरिका विश्व में एक धुर्वीय महाशक्ति के रूप में उभरा। विश्व बाज़ार्र पर लगभग एकाधिकारी पकड़ को मजबूत करने के लिए इसी ने नवपूंजीवादी अवधारणा के अन्तर्गत नवउदारवादी बाज़ार्रवाद का मॉडल प्रस्तुत किया। ''संयुक्त राज्य अमेरिका के नेतृत्व में विश्व बैंक, अन्तरराष्ट्रीय मुद्रा कोष ;प्डथ्द्ध तथा 1 जनवरी, 1995 को गैट ;ळ।ज्ज् रू ळमदमतंस ।हहतमउमदज वद जंतपिि ंदक ज्तंकमद्ध के स्थान पर अस्तित्व में आए विश्व व्यापार संगठन ;ॅज्व्द्ध ने आर्थिक क्षेत्र में जिस नीति को अपनाने पर तृतीय विश्व के देशों पर प्रभाव डाला उसे स्च्ळ अर्थात् उदारीकरण ;स्पइमतंसप्रंजपवदद्ध निजीकरण ;च्तपअंजपेंजपवदद्ध तथा वैश्वीकरण ;ळसवइंसप्रंजपवदद्ध नीति कहा गया।''5 वैश्वीकरण ने जहां समस्त विश्व को 'ग्लोबल विलेज' बना दिया, वहीं उदारीकरण ने समस्त विश्व की अर्थव्यवस्थाओं के द्वार पटल एक-दूसरे के लिए खोल दिये। उदारीकरण को स्पष्ट करते हुए वी०एल० फडिया ने लिखा है, ''उदारीकरण का अर्थ व्यापार हेतु कानूनी प्रतिबंधों में ढील देते हुए आयात व निर्यात को आसान बनाने से होता है। यह वह प्रक्रिया है जिसमें देश के शासन तंत्र द्वारा अपनाए जा रहे लाइसेंस कोटा नियंत्रण प्रशुल्क के अवरोधों को कम किया जाता है।''6 इस प्रकार स्पष्ट है कि उदारीकरण के अन्तर्गत वर्षों से चली आ रही औद्योगिक लाइसेंसिग प्रणाली को खत्म करके, विभिन्न व्यक्तिगत एवं निगमित करों तथा आयात शुल्कांे को कम करके सार्वजनिक क्षेत्रों की विभिन्न इकाईयों (जैसे बैंकिंग, मीडिया इत्यादि) को निजी एवं विदेशी बहुराष्ट्रीय कंपनियों के लिए खोल दिया जाता है। भारत का थ्क्प् ;थ्वतमपहद क्पतमबज प्दअमेजउमदजद्ध के अन्तर्गत वॉलमार्ट जैसी कंपनियों को निमंत्रण तथा साफ्टा ;ै।थ्ज्। रू ैवनजी ।ेपंद थ्तमम ज्तंकम ।हतममउमदज 01 जनवरी 2006 से लागूद्ध जैसे समझौते को लागू करना उदारीकरण के प्रमुख उदाहरण है।

साम्राज्यवाद की अवधारणा का आरम्भ यूरोपीय जगत् से शुरू हुआ है। प्राचीन समय में प्रत्येक देश अपने राजा या सम्राट के अधीन एक साम्राज्य के रूप में होता था। इतना ही नहीं सम्राट ने पड़ोसी राज्यों को जीत कर उन्हें कई शर्तो के आधार पर अपना उपनिवेश भी बनाया होता था। यह सब होने के बावजूद भी साम्राज्यवाद का वह रूप विद्यमान नहीं था, जो रूप 19वीं सदी के अंत और बीसवीं सदी के आरम्भ मंे विकसित हुआ। ''खासकर स्पेन-अमेरिका युद्ध (1898 ई.) और अंग्रेज-बोअर युद्ध (1899-1902 ई.) के बाद से अर्थनीतिक और राजनीतिक साहित्य में साम्राज्यवाद शब्द का प्रयोग जोरों से होने लगा। ... सामंतों के साम्राज्यवाद से इसे अलग करने के लिए इसे पूंजीवादी साम्राज्यवाद कहा गया।''7 यह पूंजीवादी साम्राज्यवाद यूरोपीय शक्तियों द्वारा उपनिवेश की स्पर्धा के अन्तर्गत विकसित किया गया। गैर यूरोपीय देशों के संसाधनों पर कब्जा करने और अपने उत्पादन के लिए बाजार ढूंढने हेतु पूंजीवादी शक्तियों ने साम्राज्य के लिए विभिन्न युद्ध लड़े। इसी बात को पी.टी. मून स्पष्ट करते हैं, ''साम्राज्यवाद का अर्थ गैर यूरोपीय जातियों पर उनसे सर्वथा भिन्न यूरोपीय राष्ट्रों के शासन से है।''8 अतः स्पष्ट है कि अपनी सत्ता का सर्वस्व कायम करने के लिए यूरोपीय पूंजीवादी शक्तियों ने गैर यूरोपीय राष्ट्रों पर अपना शासकीय नियंत्रण स्थापित करने की स्पर्धा में साम्राज्यवाद को फैलाया। वास्तव में साम्राज्यवाद का मूल आधार पूंजीवाद ही रहा है। आयोध्या सिंह का भी मानना है, ''पं़ूजीवाद विकास करते-करते जब चरम सीमा पर पहुंच जाता है तो वह साम्राज्यवाद बन जाता है।''9 इन तथ्यों से यह बात स्पष्ट होती है कि यूरोपीय एकाधिकारी पं़ूजीवादी शक्तियों ने बाज़ार्र और सत्ता की तलाश में साम्राज्यवादी तंत्र को फैलाया। साम्राज्यवाद के साथ-साथ साम्राज्यवाद का अभिन्न अंग उपनिवेशवाद भी समानान्तर गतिशील रहा। वास्तव में ये दोनों सिद्धान्त आपस में गहरे रूप से संबद्ध है। साम्राज्यवाद में जहां राजनीतिक नियंत्रण प्रमुख होता है, वहीं उपनिवेशवाद में राजनीतिक नियंत्रण के अलावा सांस्कृतिक नियंत्रण भी रहता है। ई.एम. विंसलो ने साम्राज्यवाद एवं उपनिवेशवाद में अंतर करते हुए लिखा है, ''साम्राज्यवाद अधिक संगठित, अधिक युद्धप्रिय, अधिक संकोचशील एवं आक्रामक होता है जबकि उपनिवेशवाद अधिक यथार्थ पर आधारित है।''10 वास्तव में उपनिवेशवाद एक जटिल प्रक्रिया है क्योंकि इसमें उपनिवेश पर उपनिवेशीय राष्ट्रों का सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक नियंत्रण रहता है।

साम्राज्यवाद के अन्तर्गत जब किसी राष्ट्र पर राजनीतिक नियंत्रण स्थापित हो जाता है तो अपनी सत्ता के वर्चस्व को दीर्घकालीन बनाए रखने के लिए, उपनिवेश राष्ट्र की संस्कृति को चरणबद्ध तरीके से समाप्त करने का प्रयास किया जाता है। साम्राज्यवादी राष्ट्र अपने उपनिवेश के बहुमूल्य संसाधनों एवं श्रमशक्ति को हथियाने तथा अपने उत्पादन के विक्रय हेतु विभिन्न असभ्य एवं बर्बर हथकण्डे अपनाने में भी संकोच नहीं करता। इतिहास गवाह है कि अपने आप को सभ्य कहलाने वाले साम्राज्यवादी राष्ट्रों ने ही सबसे ज्यादा असभ्य कार्य किये हैं।

साम्राज्यवादी राष्ट्रों ने उपनिवेशों की धन संपदा को लूटने के लिए कभी धर्म तो कभी युद्ध को अपना प्रमुख अस्त्र बनाया है। साम्राज्यवादी शक्तियों ने हमेशा वास्तविकता को छिपाते हुए इतिहास को हमेशा अपने पक्ष में लिखवाया।

अंग्रेजों द्वारा भारत में ईसाई धर्म का प्रचार उनकी उपनिवेशी नीति का एक अभिन्न हिस्सा था। लार्ड मैकाले की शिक्षा नीति में अंग्रेजी को शिक्षा का माध्यम बनाना भारतीय जीवन एवं संस्कृति पर अपना नियंत्रण स्थापित करना था। द्वितीय विश्वयुद्ध तक भारत एवं अन्य उपनिवेशों में पूंजीवादी यूरोपीय राष्ट्रों की साम्राज्यवादी एवं उपनिवेशवादी नीतियां लागू रही। द्वितीय विश्वयुद्ध में अमेरिका की जापान पर जीत ने अमेरिका को एक महापूंजीवादी शक्ति के रूप में सुदृढ़ किया।

इग्लैंड का उपनिवेश होने के कारण साम्राज्यवादी बाज़ारवाद तथा अमेरिका का प्रभुत्व होने के कारण उदारवादी बाज़ारवाद दोनों ने भारतीय समाज संस्कृति तथा साहित्य को बहुत गहरे तक प्रभावित किया है। साठोत्तरी उपन्यासकार कमलेश्वर का प्रसिद्ध उपन्यास 'कितने पाकिस्तान' उपर्युक्त साम्राज्यवाद एवं उत्तर आधुनिकता दोनों के प्रभाव के संदर्भ विशेष उल्लेखनीय हैं।

यह उपन्यास सन् 2000 ई. में प्रकाशित हुआ। ''यह उपन्यास लेखक के दीर्घकालीन अन्तर्मंथन का परिणाम है। समय और इतिहास ही इसके नायक हैं।''13 साम्राज्यवादी एवं उपनिवेशवादी नीतियां हमेशा मानवता को दो भागों में बांटती रही है। साम्राज्यवादी शक्तियों की सत्ता लिप्सा एवं बाज़ार के नियंत्रण की लालसा ने न सिर्फ भारत को दो भागों में बांटा अपितु संपूर्ण विश्व में कई पाकिस्तान खड़े कर दिये हैं। वैज्ञानिक एवं औद्योगिक विकास ने पूंजीवाद को काफी समुन्नत अवस्था में लाकर खड़ा कर दिया। पूंजीवादी देश इंग्लैंड ने अपने उत्पादन के लिए मंडी हेतु अपने साम्राज्यवाद का जाल बिछाया। यूरोप की औद्योगिक क्रान्ति (इंग्लैंड में सन् 1813 में) को बाज़ारवाद के प्रारम्भ का मुख्य बिन्दु मानते हुए कमलेश्वर 'कितने पाकिस्तान' के पात्र लू-सुन के माध्यम् से व्यक्त करते हैं, ''सच्चाई यह है कि एशिया ने सारे धर्म एवं सभ्यताएं पैदा की है और योरूप ने अपनी औद्योगिक क्रांति के बाद अपने मुनाफे के विदेशी बाजार तलाशने शुरू किए हैं ... इसीलिए तुम पश्चिमवासी भौतिकवादियों ने प्राच्य की सभ्यताओं पर आक्रमण शुरू किय हैं ... तुम्हें नहीं मालूम था कि तुम्हारे समुद्री तटों के उस पार कोई और दुनिया भी है ... तुमने सिर्फ सोने की चिड़िया हिन्दुस्तान का नाम सुना था ... जिसे खोजते हुए तुम्हारे डकैत हिन्दुस्तान के मलाबार तट तक पहुंचे थे।''14 सत्ता और साम्राज्य की इच्छा ने व्यक्ति को किस प्रकार अमानव और बर्बर बना दिया है। उपन्यास का एक गौण पात्र अफगानी मुजाहिदीन इसी दशा को व्यक्त करते हुए कहते हैं, ''ऐ अदीबे आलिया! आप हमारी मजबूरी क्यों नहीं समझते ... हम युद्ध लोलपु और रक्त पिपासु नहीं थे। हम भी इन्सान की औलाद की तरह मासूम पैदा हुए थे ... पर सत्ता और साम्राज्य की स्पर्धा ने इमें अपने हितों के लिए दरिन्दों में बदल दिया है।''14 इस वार्तालाप से स्पष्ट होता है कि सत्ता और साम्राज्य की चाहत किस हद तक मनुष्य को निर्दयी और कठोर बना देती है जो न चाहते हुए भी वे अमानवीय कार्य करने को विवश हो जाते हैं।

मजदूरों के शोषण की स्थिति को इतिहास पुरुष अभिव्यक्त करता है, ''मैंने यहां भी उन भारतीय मजदूरों को ब्लैक फोरेस्ट में भागते हुए देखा है, जो अंग्रेज उपनिवेशियों के अत्याचार नहीं सह पाए ... कुछ ने आत्म हत्याएं कर ली, कुछ हिन्द महासागर में कूद कर अपने देश की ओर भागे और कुछ सागर के गर्भ में समा गए ... कुछ को उपनिवेशियों के शिकारी कुत्तों ने चींथ डाला ... कुछ यहां के अवनूस के जंगलों को काटते-काटते खुद पेड़ों की तरह काट डाले गए।''15

साम्राज्यवादी देश अपने हित के साधन के लिए कोई न कोई बहाना बना कर सारे निर्णय व्यक्तिगत या चन्द लोगों की राय से लेते थे। भारत विभाजन संबंधी बात पर उपन्यास का पात्र कबीर साम्राज्यवादी इंग्लैंड की सरकार पर व्यंग्य करते हुए कहते हैं, ''हम आपकी सर्वशक्तिशाली चालबाज़ सरकार और आपकी मासूमियत पर दिलो जान से फिदा हैं। कबीर ने व्यंग्य से कहा-हालांकि जिन्ना साहब की प्राणघातक बीमारी को राजनीति की बिसात पर हार जीत का मोहरा बनाना एक घोर अमानवीय नजरिया है, लेकिन क्या सह सही नहीं कि उनकी बीमारी के चलते आपकी साम्राज्यवादी सत्ता, औपनिवेशिक राजनीति और खुद आपने भारत की आजादी को लेकर निर्णायक फैसले पहले ही ले लिए थे।''16 इतना ही नहीं ये साम्राज्यवादी देश अपने पंूजीवादी हित साधन के लिए सदा से घृणित व्यक्तियों तक को अपना भाई कह देते हैं। यूरेनियम् की जरूरतों को पूरा करने के लिए कांगों के हब्शियों को इंग्लैंड और वेल्जियम् भाई बोलते हैं। कांगों का एक हब्शी पात्र इसी बात को व्यक्त करता है, ''अदीबे आलिया-ये अंग्रेज और बेल्जियम के गोरे हमें हब्शी कहते हैं लेकिन जब इन्हें एटम बम बनाने के लिए यूरेनियम की जरूरत पड़ी तो यही लोग हमें अपना सहोदर भाई कहते हुए कांगों आए थे। ... अमेरीकन भी इनके साथ थे और उन्होंने ही तब हमारी इस सदी के सबसे बड़े भौतिक विज्ञानी आइंस्टीन से बेल्जियम की महारानी को खत लिखवाया कि किसी भी कीमत पर कांगो का यूरेनियम जर्मन के हाथों न बेचा जाए। यहीं से, आपके सामने इस अदालत में मौजूद माऊंटबेटन की नस्ल ने अपनी परम्परागत साजिशों की शुरूआत की थी।''17 साम्राज्यवादी ताकतों ने धन, विचार और साजिशों से अपने साम्राज्य को विश्व में फैलाया। अपने व्यापार के लिए मंडी की जरूरतों में आड़े आए भारतीय नवाब सिराजुद्दौला को परास्त करने के लिए एक साधारण अधिकारी राबर्ट क्लाइव ने राजगद्दी का लालच देकर और गोरी वेश्याएं पेश कर उनके सेनापति मीर जाफर को अपनी ओर मिला लिया। उपन्यास में उद्घोषक इसी बात को स्पष्ट करता है, ''ईस्ट इंडिया कंपनी का वह मामूली सा करिंदा राबर्ट क्लाइव अब कर्त्ता-धर्त्ता बन बैठा है। उसने धूर्त भरी साजिशें शुरू कर दी हैं। गोरी वेश्यों के जरिए उसने नवाब सिराजुद्दौला के सेनापति मीर जाफर को अपना गुलाम बना लिया है। मीर जाफर को क्लाइव ने सिराजुद्दौला की गद्दी का लालच भी दिया है।'18 इस प्रकार उन्होंने पूर्वी भारत में अपनी बाधा पर विजय पाकर अपने व्यापार को सुचारू बनाया।

अपने उपनिवेशों की संस्कृति को नष्ट करने के संदर्भ में लू-सुन कहते हैं, ''परछाइयां गुम नहीं हुई हैं ... हमारी जाति को अकर्मण्य बना कर वे परछाइयां इन लुटेरों ने छीन ली है ... हमें इन्होंने संस्कृति विहीन करना चाहा है ... संस्कृति पूर्वजों की जीवित परछाइयों का संसार है। उनकी उपस्थिति हमेशा परछाई की तरह मनुष्य के साथ रहती है ... बड़ी सभ्यताओं को निस्तेज करने का यही तरीका इन विदेशी लुटेरों ने निकाला है ... यह पहले पूर्वजों की परछाई छीनते है।''19 इसी बात की पुष्टि करते हुए अर्दली आगे कहते हैं, ''आप बिल्कुल ठीक फरमा रहे है हजूर! सबसे पहले ये पूर्वजों की परछाईयों को कत्ल करते हैं ... संस्कृतियों की तलाश में हिंसक धर्मयुद्धों को जन्म देते रहे हैं ... धर्म को इन्होंने सत्ता का हथियार बनाया।''20 इस प्रकार हर तरह से शोषण करके ये साम्राज्यवादी

शक्तियां अपने उपनिवेश के बाजार और व्यक्ति को कंगाल बना कर भिखारी बना डालती है। अंग्रेजों की साम्राज्यवादी एवं उपनिवेशवादी नीतियों के कारण भारत किस तरह कंगाल बन गया। उपन्यास का पात्र कबीर इस सत्यता पर प्रकाश डालता हैं, ''-माऊंटबेटन! हम भिखमंगों की नस्ल तुम लुटेरों ने पैदा की है ... हम जैसे भिखारियों की नस्ल तुम्हारे इंडस्ट्रियल रेवोल्यशन से पहले दुनिया के किसी देश में मौजूद नहीं थी। अमीर और गरीब पहले भी थे लेकिन भिखारियों का जन्म उपनिवेशी बन्दोबस्त के साथ हुआ ... जब धार्मिक और जीवनगत न्याय मूल्यों का अंत और मुनाफा केन्द्रित अंध शोषण और स्पर्धा का जन्म हुआ ... नहीं तो इससे पहले ग़ारीब तो थे, पर भिखारी नहीं थे। विश्व का न्यायगत आर्थिक संतुलन तुम साम्राज्यवादियों उपनिवेशवादियों ने खंडित किया है ... नहीं तो मुझ जैसा लाचार आदमी भारत और पाकिस्तान में भीख मांगने के लिए मजबूर न होता, जो एक-दूसरे के खिलाफ दुआ मांगते हैं। तुम उपनिवेशवादियों ने हमारी दुआएं भी दोगली बना दी।''21 इस प्रकार अपने उपनिवेशों को लूट कर तथा हर उपनिवेश में अपना बाज़ार स्थापित कर विश्व के एक चौथाई हिस्सों में ब्रिटिश साम्राज्य व्याप्त हो गया था।

द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात अमेरिका की जीत ने उसे महाशक्ति का दर्जा प्रदान किया लेकिन साम्यवादी देश सोवियत रूस अमेरिका को बराबर की टक्कर देता रहा। फिर भी अमेरिका ने महाशक्ति के अपने रूप को बरकरार रखते हुए विश्वव्यापी संस्थाओं जैसे विश्व बैंक, आई.एम.एफ., विश्व व्यापार संगठन, संयुक्त राष्ट्र संघ तथा नाटो जैसी सैन्य और असैन्य संगठनों पर अपना दबदबा बरकरार रखा। इन संगठनों की आड़ में अमेरिका, साम्राज्यवादी नीतियों के तहत साधन सम्पन्न राष्ट्रों को किसी न किसी बहाने लूटता रहा। बाज़ार पर नियंत्रण की भूमिका को अमेरिका ने पर्दे के पीछे ही रखा। पूंजीवादी शक्तियों के माध्यम से युगोस्लाविया पर अपने हित के लिए किये गए हमले की भयावहता को कमलेश्वर कोसावो प्रदेश की दस्तक के माध्यम से व्यक्त करते हैं, ''-जी हां अदीबे आलिया! हमारे भूखंड पर नाटो नाम के एक दशानन ने जन्म लिया है ... सागर पार का एक और राक्षस उनका सरगना है। उन्होंने मिलकर सर्बिया और युगोस्लाविया पर हमला करके मुझे श्मशान बना दिया है ... सर्बिया प्रभुसत्ता सम्पन्न मेरे ही युगोस्लाविया का हिस्सा है और कोसोवो आजाद भूखंड सर्बिया का इलाका है ... लेकिन नाटो के राक्षसों और उसके सरगना ने अपने हितों के लिए हमें बरबाद कर दिया है। वे राक्षस अग्नि ताण्डव कर रहे है, वे मेरे स्वायत्तता संपन्न देश को विभाजित करके, कोसोवो को अपने नियंत्रण में रखना चाहते हैं।''22

इन संस्थाओं के आगे विश्व के विकासशील और अल्प विकसित राष्ट्रों की दशा भिखारी के समान हो गयी है। इसी बात पर व्यंग्य करते हुए कमलेश्वर कबीर के माध्यम से कहते है, ''मेरी नस्ल तो तुम्हारे जाने के बाद भी फल-फूल रही है और मुझे खुशी है कि मेरे जैसा एक मजलूम आदमी ही भिखमंगा नहीं है बल्कि अफ्रीका, लैटिन अमेरिका, कम्बोदिया, इंडोनेशिया जैसे पचास मुल्क भी हमारी जमात में आ मिले है ... हमारी नागरिकता अब अंतर्राष्ट्रीय हो गयी है ... ये देश अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व बैंक से भीख मांगते है, मैं लाहौर पाकिस्तान की जामिया मस्जिद के बाहर भीख मांगता हुआ भारत के माऊंट मेरी चर्च और महालक्ष्मी मंदिर की भिखारियों की कतार में भी भीख मांग सकता हूं और साऊथ अमेरिका के ब्युनेस आयर्स के चर्च के सामने खड़ा होकर भी करूणा को जगा सकता हूं ... लेकिन तुम लोगों ने अपना मुनाफा केन्द्रित स्पर्धा के चलते करूणा को एक बेकार मूल्य बना दिया है।''23

शताब्दी पूर्व साम्राज्यवादी बाज़ारवाद था और आज जब अमेरिका सोवियत संघ के विघटन उपरांत अकेली वैश्विक महाशक्ति रह गई है तो उदारीकरण वाला बाज़ारवाद है। वास्तव में साम्राज्य और बाज़ारवाद का रूप वही है बस इसकी प्रक्रिया एवं बाहरी आवरण में एक भ्रामक बदलाव किया है ताकि आम उपभोक्ता की समझ से बाहर रहे। बाज़ारवाद को हथियाने की स्पर्धा आज भी उतनी ही प्रबल है, जितनी साम्राज्यवादी युग में थी। आज सिर्फ शब्दों के हेर-फेर द्वारा साम्राज्यवादी बाज़ारवाद पर उदारवादी बाज़ारवाद का आवरण चढ़ा दिया गया है।

इस बात पर प्रकाश डालते हुए कमलेश्वर अदीब के माध्यम से व्यक्त करते हैं, ''सुनों बाज़ारों के लिए ही बनते हैं साम्राज्य! और साम्राज्यों को जीवित रखने के लिए ही बनाए जाते हैं बाज़ार! साम्राज्यों की नाभि बाज़ार से जुड़ी है। साम्राज्य के रूप बदल सकते हैं ... वे प्रजातांत्रिक आर्थिक साम्राज्य का रूप ले सकते हैं परन्तु इन पंूजीवादी प्रजातंत्रों को जीने के लिए मुनाफ़े के बाजारों की जरूरत है ... बाज़ार! बाज़ार!! बाज़ार!!! यही है औद्योगिक क्रांति का सतत् जीवित रहने की मजबूरी भरा सिद्धांत। यही है पंूजीवाद। इसी का दूसरा नाम है साम्राज्यवाद। तीसरा नाम है। उपनिवेशवाद। और आज दस्तक देती हुई नई सदी में इसका नाम है बाज़ारवाद।''25 इस प्रकार कमलेश्वर ने आर्थिक समृद्धि के छदम् रूप एवं आंकड़ों को बड़ी शिद्दत के साथ 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में चित्रित किया गया है।

बाज़ारवादी शेर आज भारतीय संस्कृति के लिए उतने ही खतरनाक हो चुके हैं। इस बात का स्पष्टीकरण उपन्यास की पात्रा वीना रमानी जेसिका लाल हत्याकांड (30 अप्रैल 1999) के बारे में बताते हुए भारतीय संस्कृति पर बाज़ारवाद के प्रभाव को दर्शाती है, ''यह हमारी नाचती गाती कल्चर की पहली शहीद है ... पैदा होने के फौरन बाद इसने मां का दूध जरूर पिया था। फिर नहीं पिया। यह लगातार लिकॅर या बीयर पीती रही, क्योंकि दूध से ज्यादा प्रोटीन है बीयर में। सेब के रस से कम कैलोरीज हैं बीयर में ... यही जेसिका लाल के दिलकश और खूबसूरत होने का राज था। वह तूफानी खूबसूरती, जिसे देखकर मनु शर्मा पागल हो गया।''26 इस प्रकार भारतीय संस्कृति के विघटन की पूरी दशा वीना रामानी के माध्यम से चित्रित हुई है।

युग चेतना का महान लेखक इन साम्राज्यवादी शक्तियों को चुनौती देता हुआ कहता है कि चाहे साम्राज्यवादी बाज़ारवाद हो या उदारवादी बाज़ारवाद वे कभी भी अपने सत्य को स्वीकार नहीं कर पाएंगे। कमलेश्वर अदालत के माध्यम से कहते हैं, 'मैं जानता हूं वे कभी भी यहां हाजिर नहीं होंगे ... क्योंकि यह मनुष्य के मन की शाशवत अदालत है ... कानून के नाम पर कानून और धर्म के नाम पर धर्म का व्यापार करने वालों के पास इतना साहस नहीं कि वे इस अदालत में हाजिर हो सके।' निश्चय ही कमलेश्वर ने पूर्ण साहस के साथ बाज़ारवादी शक्तियों के छदम् रूप को उधाड़ा है।

संदर्भः

1. गोपीचंद नारंग, संरचनावाद, उत्तर संरचनावाद तथा प्राच्य काव्य शास्त्र, पृ. 386
2. (सं) अजीता गुप्ता, मधुमती, अंक: मार्च 2006, पृ. 16
3. गोपीचंद नारंग, संरचनावाद, उत्तर संरचनावाद तथा प्राच्य काव्य शास्त्र, पृ. 386
4. कृष्णचंद्र माथुर एवं हुकुमचंद जैन, आधुनिक विश्व इतिहास, पृ. 809
5. (सं) महेन्द्र जैन, प्रतियोगिता दर्पण, अंक: सितम्बर 2004, पृ. 293
6. वी.एल. फडिया, अंतरराष्ट्रीय राजनीति, पृ. 528
7. आयोध्या सिंह, साम्राज्यवाद का उदय और अस्त, पृ. 21
8. कृष्णचंद्र माथुर और हुकुमचंद जैन, आधुनिक विश्व इतिहास, पृ. 371
9. आयोध्या सिंह, साम्राज्यवाद का उदय और अस्त, पृ. 21
10. कृष्णचंद्र माथुर और हुकुमचंद जैन, आधुनिक विश्व इतिहास, पृ. 374
11. (सं) अरूण प्रकाश, समकालीन भारतीय साहित्य, अंक: नवम्बर-दिसम्बर 2008, पृ. 179
12. आयोध्या सिंह, साम्राज्यवाद का उदय और अस्त, पृ. 544
13. रामचन्द्र तिवारी, हिन्दी का गद्य साहित्य, पृ. 231
14. कमलेश्वर, कितने पाकिस्तान, पृ. 295
15. वही, पृ. 185
16. वही, पृ. 285
17. वही, पृ. 269
18. वही, पृ. 288
19. वही, पृ. 294
20. वही, पृ. 294
21. वही, पृ. 294
22. वही, पृ. 283
23. वही, पृ. 45
24. वही, पृ. 291
25. कमलेश्वर, कितने पाकिस्तान, पृ. 290
26. कमलेश्वर, कितने पाकिस्तान, पृ. 290